बल्देव भाई शर्मा की पत्रकारिता : विमर्श व विवेचन

लघु शोध-प्रबंध

(एम. फिल. जनसंचार उपाधि हेतु)

सत्र : 2016-17

ज्ञान शांति मैत्री

शोध निर्देशक

प्रो. अनिल कुमार राय

जनसंचार विभाग

शोधार्थी

राम सुन्दर कुमार

एम. फिल. जनसंचार

पंजी.क्र.- 2016/05/208/0 07

जनसंचार विभाग

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट: हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल, वर्धा – 442005

(महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

साहित्य पुनरावलोकन

शोध का उद्देश्य

शोध का महत्व एवं प्रासंगिकता

शोध की प्राकल्पना

शोध प्रविधि

प्रतिदर्श

शोध की सीमाएं

भविष्य में शोध

अध्याय- सार

प्रथम अध्याय - बल्देव भाई शर्मा का परिचय एवं पृष्ठभूमि **1-16**

1.1 परिवेश

1.2 शिक्षा

1.3 पत्रकारिता में शुरुआत

1.4 संपादक के रूप में दायित्व

1.5 कार्यशैली व चुनौतियाँ

1.6 उपलब्धियाँ

1.7 पत्रकारीय अनुभव

1.8 बल्देव भाई शर्मा द्वारा संपादित पुस्तकें

2.9 बल्देव भाई शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें

द्वितीय अध्याय – बल्देव भाई शर्मा का पत्रकारीय दृष्टिकोण **17-35**

2.1 सामाजिक दृष्टिकोण

2.2 राजनीतिक दृष्टिकोण

2.3 आध्यात्मिक दृष्टिकोण

2.4 वैश्विक दृष्टिकोण

तृतीय अध्याय – बल्देव भाई शर्मा का पत्रकारीय योगदान **36-50**

3.1 दैनिक स्वदेश

3.2 दैनिक भास्कर

3.3 आकाशवाणी व नूतन पृथ्वी

3.4 अमर उजाला

3.5 पाञ्चजन्य

3.6 अध्यक्ष : राष्ट्रीय पुस्तक विन्यास

3.7 पुस्तक संस्कृति

3.7.1 पुस्तक संस्कृति का उद्देश्य

चतुर्थ अध्याय - आंकड़ों का संकलन एवं प्रस्तुति **51-126**

4.1 सामाजिक पक्ष

4.2 राजनीतिक पक्ष

4.3 आध्यात्मिक पक्ष

4.4 बल्देव भाई शर्मा का साक्षात्कार तथा विश्लेषण

4.5 बल्देव भाई से संबंधित लोगों का साक्षात्कार तथा विश्लेषण

पंचम अध्याय- प्राकल्पना परीक्षण एवं शोध निष्कर्ष **127-135**

संदर्भ-सूची

परिशिष्ट

प्रस्तावना

सामाजिक सरोकारों तथा सार्वजनिक हित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है। सामाजिक सरोकारों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुँचाने और प्रशासन की जनहितकारी नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सबसे निचले तबके तक ले जाने के दायित्व का निर्वाह ही सार्थक पत्रकारिता है।

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा पाया (स्तम्भ) भी कहा जाता है। पत्रकारिता ने लोकतंत्र में यह महत्त्वपूर्ण स्थान अपने आप नहीं हासिल किया है बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्त्व को देखते हुए समाज ने ही दर्जा दिया है। कोई भी लोकतंत्र तभी सशक्त है जब पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहे। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका अपनाये।साथ ही राष्ट्र के सामाजिक-सांस्कृतिक क्किास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे।

पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डाले तो स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य था। स्वतंत्रता के लिए चले आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता ने अहम और सार्थक भूमिका निभाई। उस दौर में पत्रकारिता ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ-साथ पूरे समाज को स्वाधीनता की प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा। भारत में पत्रकारिता का उद्भभव ही राष्ट्रव्यापी पुनर्जागरण और समाज कल्याण के उद्देश्य से हुआ था। महात्मा गांधी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, महर्षि अरविंद,बाल गंगाधर तिलक आदि लोग पत्रकारिता के महान स्तम्भ थे| जिन्होंने पत्रकारिता को देशहित में कार्य करने का लक्ष्य और प्रेरणा दी।

पत्रकारिता में उनके आदर्श ही पत्रकारों की वर्तमान पीढ़ी के लिए दिशा-निर्देश के समान हैं, जिन पर चलकर पत्रकारों की वर्तमान पीढ़ी अपनी इस अमूल्य विधा के साथ न्याय कर सकती है। पत्रकारिता की अमूल्य विधा वर्तमान समय में अपने संक्रमण काल के दौर से गुजर रही है। दरअसल पत्रकारिता में यह संक्रमण उन आशंकाओं का अवतरण है जिसकी आशंका पत्रकारिता के युगपुरूषों ने बहुत पहले ही व्यक्त की थीं।

संपादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराड़कर भविष्य में पत्रकारिता में बाजारवाद नैतिकता के अभाव और पत्रकारों की स्वतंत्रता के बारे में कहा था ''पत्र निकालकर सफलतापूर्वक चलाना बड़े-बड़े धनियों अथवा सुसंगठित कंपनियों के लिए ही संभव होगा। पत्र सर्वांग सुंदर होंगे। आकार बड़े होंगे,छपाई अच्छी होगी, मनोहर, मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक चित्रों

से सुसज्जित होंगे, लेखों में विविधता होगी, कल्पकता होगी, गंभीर गवेषणा की झलक होगी, ग्राहकों की संख्या लाखों में गिनी जाएगी। यह सब कुछ होगा पर पत्र प्राणहीन होंगे। पत्रों की नीति देशभक्त, धर्मभक्त अथवा मानवता के उपासक महाप्राण संपादकों की नीति न होगी- इन गुणों से संपन्न लेखक विकृत मस्तिष्क समझे जाएंगे, संपादक की कुर्सी तक उनकी पहुंच भी न होगी। वेतनभोगी संपादक मालिक का काम करेंगे औरबड़ी खूबी के साथ करेंगे। वे हम लोगों से अच्छे होंगे। पर आज भी हमें जो स्वतंत्रता प्राप्त है वह उन्हें न होगी। वस्तुतः पत्रों के जीवन में यही समय बहुमूल्य है। ''(संपादक पराड़कर में उद्धृत)"

पराड़कर जी के यह कथन वर्तमान दौर की पत्रकारिता में चरितार्थ होने लगे हैं। जब पत्रकारों की कलम की स्याही हल्का लिखने लगी है और समाजहित जैसी बातें बेमानी होने लगी हैं। इसका कारण पत्रकार नहीं बल्कि वे मीडिया मुगल हैं जो मीडिया के कारोबारी होते हैं। पत्रकारिता पर पूंजीपतियों के दखल और उसके दुष्प्रभावों के बारे में पराड़कर जी ने कहा था|

लेकिन वर्तमान दौर में भी बल्देव भाई शर्मा ने देश हित में पत्रकारिता करने का साहसिक कार्य किया है। बल्देव भाई ने समाज सेवा को ही अपना मूल कर्त्तव्य माना है। बहुत ही साधारण कृषक परिवार से होने तथा अपने पिता का साया बचपन में ही उठ जाने के बाद भी इन्होने अपने समाज सेवा को ही सर्वोपरि माना ,और ये संस्कार उनको अपने पिता से ही मिला था। मां ने संघर्ष कर उनका पालन पोषण किया। बचपन संघर्षमय रहने के बाद भी श्री बल्देव भाई, अपनी लेखनी के बदौलत आगे बढ़ते रहे । इन्होनें कई अखबारों में निष्पक्ष रहकर पत्रकारिता की है। दैनिक स्वदेश, दैनिक भास्कर, अमर उजाला जैसे नेशनल अखबारों के संपादक रह चुके हैं, तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखपत्र साप्ताहिक हिंदी पत्रिका 'पाञ्चजन्य' का भी संपादक रह चुके है। "राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा की दो पुस्तकें भी है - 'मेरे समय का भारत' और 'आध्यात्मिक चेतना और सुगंधित जीवन।' इन पुस्तकों में भारत का समकालीन इतिहास लिखा गया है, जिसमें राष्ट्र सर्वोपरि है। अपने लेखों के माध्यम से बल्देव भाई ने समकालीन भारत और जीवन के हर आयाम को छुआ है। इससे समाज और राष्ट्र को दिशा मिलेगी।

- **साहित्य पुनरावलोकन**

बल्देव भाई ने लिखा है समकालीन इतिहास : दत्तात्रेय. (n.d.). Retrieved December 28, 2016, from https://www.outlookhindi.com/art-and-culture/general/baldev-bhai-has-written-contemporary-history-dattatrey-14294

'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा की दो पुस्तकों 'मेरे समय का भारत' और 'आध्यात्मिक चेतना और सुगंधित जीवन'है। इन पुस्तकों में भारत का समकालीन इतिहास लिखा गया है, जिसमें राष्ट्र सर्वोपरि है। इसीलिए यह लेखन शाश्वत हो गया है। अपने लेखों के माध्यम से बल्देव भाई ने समकालीन भारत और जीवन के हर आयाम को छुआ है। इससे समाज और राष्ट्र को दिशा मिलेगी। लोक संस्कृति के माध्यम से भारतीय संस्कृतिको जाना जाता है। इन पुस्तकों के माध्यम से बल्देव भाई ने युवाओं को जागृत किया है। '

बल्देव भाई शर्मा के द्वारा लिखित विशेषकर राजनीतिक लेख जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखपत्र 'पाञ्चजन्य' में प्रकाशित लेखों का संग्रह के रूप में उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'मेरे समय का भारत' में है। और बल्देव भाई शर्मा के लेख जो विशेषकर आध्यात्मिकता पर आधारित लेख है, उन लेखों का संग्रह उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'आध्यात्मिक चेतना और सुगन्धित जीवन' में किया गया है।

मुरारी, मयंक. (2015). ***भारत एक सनातन राष्ट्र.*** **नई दिली: प्रकाशन संस्थान.**

अनादि काल से ही भारत के लोग राष्ट्र की धारणा से परिचित हैं। भारत । भारतमाता । भारत राष्ट्र । भारत की हम संतान और यह हमारी मातृभूमि है। हम सदा से यह अनुभव करते रहे हैं कि भारत भूमि जगजन्नी का रूप है। भारत की देशभूमि पर स्थित राष्ट्र केवल भौतिक और भौगोलिक नहीं वरन उस पर भावजगत की सृष्टि भी है। माता-पुत्र के संवेदनात्मक संबंध से निकली भावना और विचार का जहां अवतरण हुआ,उसे ही राष्ट्र कहा गया। भारत एक भौगोलिक,सांस्कृतिक एवं आर्थिक विविधताओं से परिपूर्ण देश है। बावजूद इसकी मौलिक एकता बाहरी विभिन्नता में निहित है,जो इसकी आंतरिक रचना औरस्वर में अभिव्यक्त होती रही है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष (जिसमें पाकिस्तान,बांग्लादेश,नेपाल,म्यांमार,भूटान आदि भी शामिल है) को प्राचीन काल से ही एक राष्ट्र के रूप में स्वीकार गया है। इसे कभी आर्यावर्त,कभी भारतवर्ष,कभी हिन्द, हिन्दुस्तान और भारत तो कभी इंडिया कहा गया है। वैदिक युग से ही साहित्यकारों,मनीषियों ने इसे एक ऐसे विशाल और विस्तृत भौगोलिक इकाई के रूप में देखा है,जो हिमालय से लेकर समुंद्र तक फैला है। हिमालय यानी शीर्ष पर कैलाश (भगवान् शिव) और समुंद्र यानी अंत पर कन्याकुमारी (माता पार्वती) इस विशाल देश को एक इकाई के रूप में बांधते रहे हैं। और इस इकाई को प्राप्त करने वाले शासक को सदैव ही पिता का शीर्ष प्राप्त करने तथा माता की चरण छूने की चाह रही,जिसके कारण पराक्रमी और शक्तिशाली शासकों ने दिग्विजय अभियान चलाया और कई ने चक्रवती की उपाधि भी प्राप्त की।

बल्देव भाई भी स्वामी विवेकानंद के दिखाए मार्गो पर जो प्रेम, सेवा और बंधुत्व के मार्ग पर चलकर समस्त मानवता के लिए स्वार्थ-भेद-संघर्ष से सुखमय और कल्याणकारी व शांतिपूर्ण जीवन का संदेश उनका आत्मसात किया है।

राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम व स्नेह के साथ भारत माता को साक्षात देवी मानकर उसके उत्कर्ष के लिए उसकी सेवा में सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावना, दरिद्र नारायण की सेवा, स्त्री चेतना का जागरण, शिक्षा का प्रसार, राष्ट्रोंनयन में युवाओं की भूमिका आदि के साथ कार्य किया है।

श्री बलदेव भाई शर्मा की जीवन गाथा। ESD। हिन्दी. (n.d.). Retrieved December 30, 2016, from http://airworldservice.org/hindi/archives/15906

बल्देव भाई शर्मा बहुत ही साधारण कृषक परिवार से होने तथा अपने पिता का साया बचपन में ही उठ जाने के बाद भी इन्होनें अपने कर्तव्य के रूप में समाज सेवा को ही सर्वोपरि माना और ये संस्कार उनको अपने पिता से ही मिला था| मां ने संघर्ष कर उनका पालन पोषण किया। बचपन संघर्षमय रहने के बाद बल्देव भाई अपनी लेखनी के बदौलत आगे बढ़ते रहे। इन्होनें कई अखबारों में निष्पक्ष रहकर पत्रकारिता की है। दैनिक स्वदेश, दैनिक भास्कर, अमर उजाला जैसे नेशनल अखबारों के संपादक रह चुके हैं, तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखपत्र साप्ताहिक हिंदी पत्रिका 'पाञ्चजन्य' का भी संपादक रह चुके है।आज लेखक, कवि, समाज सेवी और वर्तमान में नेशनल बुक ट्रू स्ट के अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा है| इनकी जीवन समर्पित दो पंक्तियाँ है –

'धन्य भाग सेवा का अवसर पाया... (२)

चरण कमल की धूल बनी मैं मोक्ष द्वार तक आया'।

बल्देव भाई शुरुआत से ही अपनी जीवन को एक चुनौती के रूप में जीते हुए, समाज सेवा, आध्यात्म व राष्ट्रभक्ति के साथ पत्रकारिता में कार्य किया है। हमेशा से पत्रकारिता को समाज व राष्ट्र सेवा के लिए एक हथियार के रूप में उपयोग किया है। क्योकिं इनका मानना है कि पत्रकारिता का पहला और अंतिम कर्तव्य समाज व राष्ट्रहित में होना चाहिए। इसीलिए इनके द्वारा लिखित लगभग सभी लेखों में समाज व राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत हुई दिखती है।

दूसरों की उन्नति के लिए जिया जीवन ही सार्थक. (2017, March 19). Retrieved January 2, 2017, fromhttps://www.bhaskar.com/news/ABH-bhaskar-editorial-by-baldev-sharma-news-hindi-5554378-NOR.html

अपने जीवन के बारे में सोचता हूँ, तो यहाँ तक पहुंचने की यात्रा में बहुत से प्रसंग, बहुत से लोग याद आते हैं, जिनके संयोग से मेरा जीवन इस रूप में खड़ा हुआ है कि मैं इसकी कुछ सार्थकता का संतोष लेकर जी सकूँ। वैसे भी ऐसा बहुत कम समय होता है कि कोई एक घटना आपका जीवन बदल दे। दरअसल, जिंदगी एक निरंतरताहै, एक विचार यात्रा है,

अच्छे-बुरे अनुभवों का समुच्चय है, जिससे व्यक्तित्व रूपाकार लेता है। मैं जिस घर में जन्मा वह मथुरा जिले के प्रसिद्ध तीर्थ 'दाऊजी' जिसे सरकारी दस्तावेजों में 'बल्देव' लिखा जाता है, से लगे एक गांव 'परलौनी' में साधारण किसान परिवार का था, लेकिन ज्ञान व सेवा परिवेश में रचा-बसा। मैं छोटा था तब ये बातें बहुत समझ में नहीं आती थीं।

इसके बाद भी यह अहसास था कि वहां कोई महानता भले नहीं है, लेकिन जिंदगी का अर्थ मनुष्यता का बोध और समाज व देश के लिए अपनी जिम्मेदारी का अहसास खूब बिखरा है। इसी वातावरण से मैंने सीखा कि जीवन में महानता या सफलता पाना महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि अहमियत इस बात की है कि अपने और दूसरों के उन्नयन के लिए कितना सार्थक जीवन जिया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के मुखिया के रूप में कार्य करना मेरी पत्रकारीय भूमिका का ही विस्तार है। समाज को विशेषकर नई पीढ़ियों को पुस्तकों व लेखन के माध्यम से ज्ञानसंपन्न, विचारवान व संस्कारवान बनाना एक अक्षर यज्ञ है। ऐसा विचार या लेखन, जो भारत की सांस्कृतिक चेतना, हमारे सामाजिक व मानवीय मूल्यों व राष्ट्रीयता का पोषण नहीं करता वह प्रगतिशीलता या आधुनिकता के नाम पर केवल बौद्धिक विलासिता है। भारत की ज्ञान संपदा जिसे हमारे ऋषियों ने विश्व कल्याण के लिए रचा उसी में से 'सर्वे भवंतु सुखिन:' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसा शांति-सद्भाव का सर्व सन्वयी चिंतन विकसित हुआ। इसके प्रति एक सकारात्मक दृष्टि रखकर इसे समृद्ध करने का ही संदेश 'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद ने दिया है, 'अपने सुख का विस्तार करो, जग को सुखी बनाओ।' यह सकारात्मकता का सबसे बड़ा मंत्र है और जीवन की ऊर्जा भी। पत्रकारिता का कठिन धर्म निभाते समय यदि पत्नी की सकारात्मक भूमिका साथ न मिले तो यह मार्ग बहुत दुरुह हो जाता है। मैं इस मामले में अत्यंत सौभाग्यशाली रहा हूं।

बल्देव भाई जिस परिवार में जन्में वह परिवार शुरू से ही ज्ञान व सेवा में रचा बसा। जिससे बालक बल्देव को बचपन से ही इस तरह संस्कार मिला। बल्देव भाई के पिता जी संघ के प्रचारक थे। और हमेशा वह समाज सेवा के लिए तत्पर रहा करते थे, जिसके कारणसमाज में उनका बहुत ही कद्र था। अपने पिता के दिखाए मार्गों को ही आधार मानकर बल्देव भाई भी उसी मार्ग पर चलते रहे तथा समाज और राष्ट्र के लिए तत्पर रहे।

शर्मा, हरिश्चंद्र. (2009). *आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ*. त्रिपोलिया जयपुर: कॉलेज बुक डिपो.

'वर्तमान युग को राजनैतिक दृष्टि से विचारधाराओं का युग कहा जाता है जिसमें विभिन्न राज्यों का राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय व्यवहार आदि उद्देश्य के अतिरिक्त अनेक विचारधाराओं से संबंधित होता है। वर्तमान समय में विचारधाराओं पर जो अत्यधिक जोर दिया जाने लगा है उससे यह अभिव्यक्त होता है कि मनुष्य के संबंध में प्रयाप्त जानकारी यह आवश्यक है कि मनुष्य के संबंध में स्थित ऐतिहासिक तथा सामाजिक स्थितियों का व्यापक ज्ञान प्राप्त किया जाये।

संभवतः सामाजिक विज्ञानों की लोकप्रियता बढ़ने के पीछे यही कारण रहा है कि इनके द्वारा व्यक्ति की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों को पर्याप्त महत्व दिया जाने लगा है।

जब हम कह सकते है कि कोई व्यक्ति कार्य के लिए योग्य है या एक विशेष नीति वांछनीय है या एक राजनैतिक संस्था ठीक उसी प्रकार कार्य करती है तो हम एक प्रकार से ऐसा मूल्यांकन देते है जिसकेसंबंध में तर्क भी दिया जाता है बिना तर्क दिए यह कहना गलत होगा कि मैं इस कार्य के लिए इस व्यक्ति को पसंद करता हूँ या इस नीतिको पसंद करता हूँ या इस संस्था को प्राथमिकता देता हूँ इसका अर्थ यह नहीं होता की मूल्यांकनकर्ता व्यक्तियों,नीतियों या संस्थाओं का वर्णन वस्तुगत रूप से ही करेगा। ये मूल्यांकन न गुणों की साहित्यिक व्याख्याएँ होती हैं और न ही व्यक्तिगत प्राथमिकताओं की विषयगत अभिव्यक्तियाँ होती है। ये कुछ विशेष प्रकार के निर्णय होते हैं जो प्रसंगवश लिए जाते हैं जो कि कारण एवं प्रमाणों पर आधारित होते हैं किंतु असहमति की स्थिति में ये असहमतियाँ पूर्ण रूप से प्रभावशाली नहीं होती। राजनैतिक संस्कृति एक ऐसी धारणा है जिसने शास्त्र को नया रूप और रंग प्रदान किया। किसी भी संस्कृति में व्यक्ति के व्यवहार का तरीका उसकी मान्यता, विश्वास, सम्मान, स्वामीभक्ति, घृणा आदि को समाहित किया जाता है। ये सभी बातें राजनीति के क्षेत्र में अपना अस्तित्व रखती है और सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में भी। जब संस्कृति राजनैतिक प्रसंग में आती है तब उसको राजनैतिक संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। आधुनिक राजनैतिक विचारकों ने इस पर बहुत कुछ लिखा है।

जब व्यक्ति के राजनैतिक जीवन की सांस्कृतिक जीवन की व्याख्या की जाती है तब यह न केवल राजनीतिज्ञों के लिए वरन स्वयं जनता के लिए भी उपयोगी होती है। लोग एक दूसरे के व्यवहार को समझ जाते हैं तथा उसमें समन्वय स्थापित करते हैं। अन्य मानवीय व्यवहारों की भांति राजनैतिक व्यवहार राजनीती के खेल के खिलाड़ियों के लिए अर्थ रखता है। यदि राजनैतिक व्यवहार को उसकी विषय वस्तु एवं रूप की दृष्टि से देखें तब हमारा अध्ययन प्रयाप्त एक पक्षीय हो जायेगा। असल में राजनैतिक व्यवहार के सांस्कृतिक विश्लेषण को रूपों के विषयगत पर्यवेक्षण तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। इसका संबंध उस अर्थ से होता है जो कि लोगों द्वारा इन रूपों को प्रदान किया जाता है। इसके लिए व्यक्ति विशेष को विश्लेषण की इकाई बनाया जाएगा। उच्च साहित्यिक एवं संयुक्त संस्कृतियों में राजनीति को दिए गए अर्थो का अध्ययन लिखित प्रमाणों के विश्लेषण द्वारा ही किया जा सकता है।'

बल्देव भाई का बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़ाव रहा। बचपन से ही नियमित रूप से शाखा जाना चाहिए इसका संस्कार उन्हें अपने परिवार विशेष कर पिता जी के माध्यम से मिला। फिर जैसे-जैसे वो बड़ा होते गये उस तरह से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारकों आदि से मिलना-जुलना होता चला गया। संघ के शाखा के अन्दर अनेकों तरह के कार्यक्रम होते थे जिसका अनुभव संस्कार के रूप में होता चला गया और इस तरह से धीरे-धीरे संघ के बारे में

समझ भी विकसित होती चली गयी। चूँकि इनके पिता जी बड़ी तेजस्वी व्यक्ति थे, बहुत ही समर्पित और सेवा भाव ही उनका तपस्य सन्यासियों की जीवन था। इस कारण से संघ के अन्दर उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। आज भी कुछ गिने-चुने लोग जो उनके पिता जी के साथ कार्य किये थे, तो उनके प्रति बड़ी ही आदर भाव और श्रद्धा के साथ बात करते हैं।

इस तरह से पिता जी के प्रचारक होने के कारण संघ का संस्कार धीरे-धीरे मेरे मन में आता चला गया। और संघ की शाखा में जाते-जाते वो विचार और दृढ़ होता चला गया। जब वो संघ की विचार को समझने लगे तो फिर उनका बौद्धिक भाव जुड़ा की संघ के द्वारा इस देश में चरित्र र्निाण और देश भक्ति का भाव जागृत किया जाता है। ये दो महत्वपूर्ण चीजें थी और तीसरी चीज कि इन दोनों भावनाओं से युक्त एक शक्तिशाली और संगठित समाज खड़ा करना यह संघ के द्वारा किया जा रहा है। इस प्रकार बल्देव भाई को लगा कि इससे महत्वपूर्ण कार्य, समाज-कार्य और देश के लिए हो नहीं सकता और वह उसी विचारधारा को अपनाकर अपने जीवन में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

पाञ्चजन्य (पत्र). (2017, December 22). Retrieved January 4, 2017,from. https://hi.wikipedia.org/wiki/पाञ्चजन्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद 14 जनवरी 1948 को मकर संक्राति के पावन पर्व पर अपने आवरण पृष्ठ पर भगवान श्रीकृष्ण के मुख से शंखनाद के साथ श्री अटल बिहारी वाजपेयी के संपादकत्व में'पाञ्चजन्य' साप्ताहिक का अवतरण स्वाधीन भारत में स्वाधीनता आन्दोलन के प्रेरक आदर्शों एवं राष्ट्रीय लक्ष्यों का स्मरण दिलाते रहने के संकल्प का उद्घोष ही था। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि जब 'धर्मयुग', 'दिनमान', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'रविवार' जैसे प्रतिष्ठित और साधन सम्पन्न साप्ताहिक असमय ही कालकलवित हो गए, ऐसे में साधनविहीन 'पाञ्चजन्य' न केवल अपनी जीवन यात्रा को अखंड रख सका अपितु आज सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले साप्ताहिकों के बीच प्रथम पंक्ति में खड़ा है। 'पाञ्चजन्य'की सफलता का एकमात्र रहस्य यही हो सकता है कि उसका जन्म मुनाफाखोर, व्यावसायिकता के बजाय समाजनिष्ठ ध्येयवादी पत्रकारिता में से जन्म हुआ है। ध्येयवादी पत्रकारिता की यात्रा कभी सरल और सुगम नहीं हो सकती। इसलिए 'पाञ्चजन्य'की यात्रा स्वातंत्रयोत्तर ध्येय समर्पित और आदर्शवादी पत्रकारिता के संघर्ष की यशोगाथा है।

'पाञ्चजन्य' साधनविहीन होने पर भी सत्ता की ओर से आने वाले अनेक विपरीत प्रवाहों को झेलकर भी अपने ध्येय पथ पर बढ़ता रहा। उसके जन्म का एक माह भी पूरा नहीं हुआ था कि गांधी हत्या से प्रभावित वातावरण का लाभ उठाकर सरकार ने फरवरी, 1948 में 'पाञ्चजन्य' का गला घोंटने की कोशिश की। उसके सम्पादक, प्रकाशक और मुद्रक को जेल में बंद कर दिया, उसके कार्यालय पर ताला ठोक दिया। साढ़े चार माह बाद न्यायालय की कृपा से 'पाञ्चजन्य' का पुन: प्रकाशन संभव हो पाया। छ: महीने निकलने के बाद दिसम्बर, 1948 में 'पाञ्चजन्य' पर फिर हमला करके सात माह के लिए उसके मुंह पर ताला ठोंक दिया गया। जुलाई, 1949 में यह ताला हटते ही 'पाञ्चजन्य' का शंखनाद पूर्ववत्

गूंज उठा। राष्ट्र हित में 'पाञ्चजन्य' का निर्भीक स्वर सरकारों के लिए हमेशा सरदर्द बना रहा। 1959 में कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बत की स्वाधीनता के अपहरण और दलाई लामा के निष्कासन के समय 'पाञ्चजन्य' ने नेहरु जी की अदूरदर्शिता और चीन की नीति की निर्भय होकर आलोचना की। 1962 में भारत पर चीन के हमले के लिए 'पाञ्चजन्य' ने नेहरु जी की असफल विदेश नीति एवं रक्षा नीति को दोषी ठहराया, जिससे तिलमिलाकर नेहरु सरकार ने 'पाञ्चजन्य' को धमकी भरा नोटिस दिया। 1972 में भारतीय सेनाओं की विजय को शिमला समझौते की मेज पर गंवा देने के विरूद्ध 'पाञ्चजन्य' के आक्रोश से तिलमिलाकर इंदिरा सरकार ने 'पाञ्चजन्य' के सम्पादकों एवं प्रकाशकों को लम्बे समय तक कानूनी कार्यवाही में फंसाए रखी। जून 1975 में इंदिरा गांधी ने आपात स्थिति की घोषणा करके भारतीय लोकतंत्र का गला घोंटने की कोशिश की और मार्च, 1977 में आपातकाल की समाप्ति पर ही 'पाञ्चजन्य' पुन: अपनी ध्येययात्रा आरंभ कर सका। 'पाञ्चजन्य' के निर्भीक स्वर से तिलमिलाकर लोगों एवं सरकार द्वारा दायर किए गए मुकदमों की सूची बहुत लम्बी है। 'पाञ्चजन्य' के सम्पादकों एवं प्रकाशकों का एक पैर हमेशा न्यायालय में रहा है।

'पाञ्चजन्य' जैसी पत्रिका जो की हमेशा से राष्ट्र व समाजहित को अपना लक्ष्य मानकर आज वर्षों से अपनी महत्ता को बनाये रखा है। ऐसी कर्त्तव्यनिष्ठ पत्रिका जो हमेशा अपने पत्रकारिय नैतिकता को बचाए रखा| उस पत्रिका का सहायक संपादक और फिर लगातार पांच सालों तक संपादक के रूप में बल्देव भाई शर्मा रहे हैं।

राधाकृष्णन,सर्वपल्ली. (1926).*(धर्म और समाज)*. (सं). (सोनी, वेद प्रकाश.) (तिवारी, रीमा. अनु.).

यह धारणा हम सबों के दिल में घर कर गयी है प्रकृति की अंधशक्ति को छोड़ संसार में कोई वास्तु नहीं है। जिसकी उत्पति यूनान से नहीं हुईहो; पर यह सर्वथा सत्य नहीं है। आधा संसार हिन्दू धर्म से प्रभावित स्वतंत्र नींव पर खड़ा है। चीन और जापान तिब्बत और स्याम,वर्मा और लंका सब भारत को अपना आध्यात्मिक घर मानते हैं। भारत की अपनी सभ्यता अल्पायु वाली नहीं है। इसके एतिहासिक वृतांत चार सहस्त्राब्दियों से अधिक प्राचीन है। उस समय भी वह सभ्यता की उस अवस्था पर पहुँच चूका था कि जिसकी धरा समय-समय पर मंद और प्रायः अवरुद्ध होते हुए भी आज तक अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती चली आ रही है। यह धारा चार या पांच सहस्त्राब्दियों के आध्यात्मिक विचारों और अनुभूतियों की भट्ठी में ताप कर खरा निकला है। यधपि इतिहास के प्रारंभ से विभिन्न जातियों और संस्कृतियों के लोग भारत में रहे हैं पर हिंदू-धर्म अपनी प्रधानता बनाये रखने में सहायक समर्थ रहा है। विनसेंट स्मिथ ने कहा "निःसंदेह भारत में एक आधारभूत आतंरिक एकता है। यह एकता भौगोलिक पृथकता और राजनीतिक श्रेष्ठता से पैदा होने वाली एकता से कहीं अधिक गंभीर है। यह एकता असंख्य परस्पर विरोधी रक्त, रंग, भाषा, पोशाक, रीति-रिवाज तथा सम्प्रदाय के घेरे से बहुत ऊपर उठी है।

भारत को एक धार्मिक देश माना जाता है। इसी धर्म के आधार पर स्वामी विवेकानंद ने भारत को विश्व गुरु बनाने का कार्य किया है। हिंदू धर्म (सनातन धर्म) विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्मों में से एक है। यह धर्म अपने अन्दर एक संस्कार, जीवन-यापन,कई अलग-अलग उपासना पद्धतियाँ, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुए है। वस्तुतः धर्म रिलीजन नहीं है और न व्रत, उपवास या पूजा-अर्चना का कर्मकांड। ऐसे किसी कर्मकांड के बिना भी धर्मनिष्ठ हुआ जा सकता है, क्योंकि धर्म मानव जीवन की एक व्यापक संकल्पना है। धर्म तो मानव समाज को मनुष्य रूपी कर्तव्यबोध के साथ जोड़े रखने वाली अवधारणा है। यदि यह बोध व अवधारणा समाप्त हो जाए तो मानव अस्तित्व का कल्पना तक नहीं की जा सकती है। यदि ऐसा हो तो फिर मनुष्य और जानवर में कोई फर्क नहीं होता केवल शारीरिक संरचना को छोड़कर।

शुक्ल, मदनलाल. (2009). *व्यक्तित्व निर्माण*. नई दिल्ली: विद्या विहार.

'हमारे राजनेता एवं उच्चधिकारी इस बात पर विचार करें कि ये भावी पीढ़ी को विरासत में क्या देना चाहते हैं? वस्तुतः आज देने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं है। उन्होंने देश की भौतिक प्रगति में योगदान तो किया है,मगर उस प्रगति का लाभ आम जनता को नहीं मिल पाया है। देश के अंदर राष्ट्रीय चरित्र निर्मित नहीं हो पाया है। सही अर्थों में देश की प्रगति तो यह होनी चाहिए थी कि हर भारतीय राष्ट्रीयता से,देशप्रेम से ओत-प्रोत हो जाए। हर नागरिक का चरित्र उज्जवल हो तथा देश में आपसी भाईचारा हो। देश की एक राष्ट्र भाषा हो। आज तो कुछ भी हो रहा है स्वार्थ की आपूर्ति का साधन बनाने के लिए हो रहा है।

आज देश को सबसे अधिक जरुरत है चरित्र-निर्माण की,व्यक्तित्व-निर्माण की और व्यक्ति के विकास की। व्यक्ति के विकास से ही राष्ट्र का विकास होता। व्यक्ति ठीक होगा तो राष्ट्र ठीक होगा। आजादी के बाद देश में व्यक्ति के विकास-संबंधी शिक्षा की उपेक्षा हुई है। सब तरह की योजनाएँ बनी,लेकिन व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में तथा व्यक्ति-विकास को लेकर करीब-करीब कुछ भी नहीं किया गया। अतः हमें व्यक्ति के विकास के लिए आह्वान करना होगा। जिस प्रकार मंदिर में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है,उसी प्रकार राष्ट्र-रुपी मंदिर में व्यक्ति-रुपी मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करनी होगी। मनुष्य निष्प्राण है,उसमें समर्पण की भावना नहीं है। राष्ट्रप्रेम नाम की खोज से वह अनभिज्ञ है। बड़े-से-बड़े नेता का जीवन-दर्शन आत्मकेंद्रित हो गया है। नई पीढ़ी के दिल में आशा जगानी होगी-ऐसा आस्था और परिश्रम से ही संभव है।'

ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति का विचार ही उसके चरित्र का निर्धारण करता है। जो विचार ज्यादा समय तक मानव-मष्तिक पर बना होता है,वह चरित्र का रूप धारण कर लेता है। और यही चरित्र मनुष्य के संस्कार में बदल जाता है। संस्कार मानव जीवन को बहुत प्रभावित करता है, सामान्य विचार को क्रियान्वयन करने के लिए व्यक्ति को मेहनत करना पड़ता है। जबकि संस्कार उस व्यक्ति को एक यंत्र के तरह संचालित करने का कार्य करता है। व्यक्ति का विकास बिना

चरित्र के संभव नहीं है और बिना चरित्र के व्यक्ति का पहचान भी नहीं होता है। इस कारण से व्यक्ति का चरित्र निर्माण बहुत ही आवश्यक तत्व है। मनुष्य के संस्कार व चरित्र ही होता है जो हजारों के भीड़ में भी उसे एक अलग पहचान देने का कार्य करता है। प्रकृति का यह नियम है कि मनुष्य का आकृति एक-दूसरे से भिन्न होता है। आकृति का यह भेद केवल उसके वास्तविक आकृति तक ही नहीं है बल्कि उसके स्वभाव,संस्कार व प्रवृतियों में भी भिन्न होता है। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए व्यक्ति के चरित्र-निर्माण होना अत्यंत आवश्यक है,तभी देश का चहुमुखी विकास संभव है। भारतीय संस्कृति समूचे जगत को सार्थक जीवन दर्शन देने में सक्षम है। भारत भूमि की सारी परम्पराएँ हिन्दू समाज की सुदृढ़ सभ्यता की ही देन है।

यादव,रवीन्द्रनाथ;& यादव,अल्पा. (2009). ***पर्यावरण चिंतन.*** **दिल्ली: निर्मल पब्लिकेशन.**

जल का हमारी तंदरुस्ती और खुशहाली से बहुत गहरा संबंध है। जीव तथा वनस्पति की मूलभूत आवश्यक्ताओं के लिए जल अपरिहार्य है। मानव एवं जीव-धारियों के शारीर के अधिकांश भाग में 60 प्रतिशत जल विधमान है। पानी व जीवन को एक दूसरे का पर्याय कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। हमारा लहू और पेड़-पौधों का रस,पानी में खानिप पदार्थोंवाला घोल ही तो है। हमारे ग्रह(पृथ्वी) के करीब तीन-चौथाई भाग में किसी-न-किसी रूप में पानी विधमान है;अर्थात पानी की प्रचुर मात्रा का उपलब्ध होना एक ख़ुशी का संकेत है।

प्राचीनकाल में जब शहर नहीं थे,आबादी कम और बिखरी हुई थी तो प्रदूषण की समस्या नहीं के बराबर थी। लेकिन लगभग तीन सौ वर्ष पहले,जब शहरीकरण और औधोगिकरण ने पूरे विश्व समुदाय को अपनी चपेट में ले लिया तो प्रदुषण में तेजी से बढ़ोतरी होने लगी। सबसे पहले नदियाँ प्रदूषित हुई क्योकिं कचरा डालने के लिए इनका उपयोग सबसे अधिक होता था। आज हालात यह है कि कोई भी नदी प्रदूषण मुक्त नहीं है। विभिन्न नदियों के प्रदूषण स्तर में अंतर है। यह बात गंदे पानी के साथ ठोस कचरे को दिया गया है। शेरोन में उत्पन्न घरेलू कचरे को भी भूमि पर डाला जाता है। यह क्रिया वर्षो से लगातार चलती आने के कारण अब कई स्थानों पर भुभर्गीय जल भी प्रदूषित हो गया है। समुंद्र और महासागरों अथाह जल-राशि भी अपने अविवेक से मनुष्यता को प्रभावित किया है।

'ऐसा कहा जाता है कि यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो वह जल के लिए ही होगा। क्योकिं जल का जीवन से गहरा संबंध है। हमारे श्रृष्टि के पांच तत्वों में जल का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जल के बिना हम इस संसार की कल्पना तक नहीं कर सकते है। वैज्ञानिकों का ऐसा मानना है कि जीवन की उत्पति जल के द्वारा ही संभव हो पाया है। पृथ्वी पर जल एक अद्भुत वरदान है,जिसका संग्रह करना हमसबों के लिए अत्यंत आवश्यक है। जल के बिना मनुष्य क्या कोई भी जीव-

जन्तु, पेड़-पौधा, पशु आदि भी नहीं रह सकता है। यदि कोई व्यक्ति जल का पर्याप्त मात्रा में सेवन करे तो मानसिक, शारीरिक थकान, तनाव आदि से मुक्तिप्राप्त करता है।'

- **शोध का उद्देश्य**

- बल्देव भाई शर्मा की पत्रकारीय सरोकारों का आकलन करना।
- बल्देव भाई शर्मा का हिंदी पत्रकारिता में योगदान कोरेखांकित करना॥
- बल्देव भाई शर्मा के लेखन का विश्लेषण करना।
- दैनिक स्वदेश से लेकर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी.टी.) के अध्यक्ष तक के सफ़र का अवलोकन करना॥

- **शोध का महत्व एवं प्रासंगिकता**

बल्देव भाई शर्मा ने पत्रकारिता के द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार राष्ट्र की संकल्पना का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हो रही हलचलों, संभावनाओं पर विचार कर एक नई दिशा देने का काम पत्रकारिता के माध्यम से किया है। इनकी पत्रकारिता जीवन के प्रत्येक पहलू पर नजर रखती है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, विज्ञान,आध्यात्मिक,कला आदि क्षेत्रों में पत्रकारिता के माध्यम से इनका योगदान रहा है। इन संदर्भोंमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक पत्रकारिता का महत्व खासा बढ़ गया है। निष्पक्ष पत्रकारिता के प्रतिमान स्वरूप यह शोध भविष्य में निहायत ही आवश्यक होगा| एक पत्रकार के नैतिक कर्त्तव्य को भी जानने के लिए यह शोध प्रासंगिक है|

- **शोध की प्राकल्पना**

- बाजारवाद के इस दौर में भी बल्देव भाई शर्मा ने अपने पत्रकारीय नैतिकता को बचाए रखा है।
- भारतीय संस्कृति के धरोहर को सहेजने में अपना महत्पूर्ण योगदान दिया है।
- पत्रकारिता को हमेशा लोक जागरण के रूप में देखा है।
- राष्ट्र को सर्वोपरि माना है।

- **शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध के अंतर्गत बल्देव भाई शर्मा के प्रकाशित कुछ प्रमुख लेखों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है, तथा बल्देव भाई शर्मा का एवं उनसे सम्बंधित लोगों का संरचित एवं अर्धसंरचितसाक्षात्कार लिया गया है।

- **प्रतिदर्श**

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श के रूप में बल्देव भाई शर्मा द्वारा विभिन्न समाचार-पत्रों में प्रकाशित सामाजिक दृष्टिकोण, राजनैतिक दृष्टिकोण, आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार 25 लेखों का अंतर्वस्तुविश्लेषण एवं बल्देव भाई शर्मा तथा उनसे संबंधित लोगों का विभिन्न माध्यमों से लिए गए साक्षात्कार का अंतर्वस्तु विश्लेषण शामिल किया गया है।

- **शोध की सीमाएं**

प्रस्तुत शोध की सीमा बल्देव भाई शर्मा का सांस्कृतिक,राजनैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में पत्रकारिता के माध्यम से इनके योगदान का अवलोकन करना है।

- **भविष्य में शोध**

बल्देव भाई शर्मा के द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान, पत्रकारिता रुपी पेशा में एक नया आयाम को स्थापित करने तथा इनके कृतित्व व व्यक्तित्व को विस्तृत रूप से जानने व समझने के लिए भविष्य में शोध किया जा सकता है। जिससे व्यक्ति को जीवन जीने की एक अद्भुत कला के साथ पत्रकारों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को समाज व राष्ट्रहित की महत्ता को सिखने व समझने में आसानी होगी।

- **अध्याय सार**

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध का उद्देश्य, शोध का महत्व व प्रासंगिकता, शोध प्रश्न, उपकल्पना, एवं शोध में प्रयुक्त होने वाली प्रविधियों, साहित्य पुनरावलोकन आदि की चर्चा विस्तार से की गयी है। इस अध्याय में शोध अभिकल्प की चर्चा करते हुए शोध प्रक्रिया को पूरी तरह से समझाया गया है। इससे शोध की सम्पूर्ण रूप-रेखा को आसानी से समझा जा सकता है।

प्रथम अध्याय में बल्देव भाई शर्मा का संक्षिप्त परिचय देते हुये उनके परिवेश, शिक्षा, पत्रकारिता में शरुआत, संपादक के रूप में दायित्व, कार्यशैली व चुनौतियाँ, उपलब्धियाँ, पत्रकारीय अनुभव, बल्देव भाई शर्मा की संपादित पुस्तक एवं इनके द्वारा प्राकशित पुस्तकों के बारे में विस्तार से बताया गया है। यह अध्याय बल्देव भाई की सम्पूर्ण जीवन की पृष्ठभूमि से लेकर वर्तमान समय तक की यात्रा व पत्रकारीय अनुभव पर आधारित है।

द्वितीय अध्याय में बल्देव भाई शर्मा का पत्रकारीय दृष्टिकोण के अंतर्गत सामाजिक दृष्टिकोण, राजनीतिक दृष्टिकोण, आध्यात्मिक दृष्टिकोण और वैश्विक दृष्टिकोण को बताया गया है। जिसमें उनकी पत्रकारिता के दौरान सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक व वैश्विक दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। बल्देव भाई शर्मा ने सामाजिक सरोकारों ,राष्ट्रहित और लोकजागरण के महत उद्देश्य के लिए ही पत्रकारिता की भूमिका को महत्वपूर्ण मानकर ही इस - क्षेत्र में कार्य करना तय किया। इनका मानना था कि"सफल और नामचीन होना हमें भले ही बड़ी उपलब्धि लगती हो लेकिन वह ज्यादातर तात्कालिक ही होती है।

तृतीय अध्याय में बल्देव भाई शर्मा के पत्रकारीय योगदान को दर्शाया गया है। जिसमें दैनिक स्वदेश, दैनिक भास्कर, अमर- उजाला, पाञ्चजन्य, नूतन पृथ्वी, आकाशवाणी, अध्यक्ष :राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और पुस्तक -संस्कृति नामक पत्रिका के रूप में पत्रकारीय योगदान को विस्तृत रूप से बताया गया है। बल्देव भाई शर्मा का हिंदी पत्रकारिता का में काफी सराहनीय योगदान रहा है। इनके द्वारा राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व के मुद्दों पर सभी प्रमुख पत्रपत्रिकाओं के - लिए लेखन कार्य किया गया है। बल्देव भाई शर्मा ने 35 वर्षों से पत्रकार के रूप में कई प्रमुख समाचार पत्रों में संपादक के साथ उच्च पदों का सफलता पूर्वक निर्वहन किया हैं, वे विभिन्न हिंदी समाचार चैनलों पर राजनीतिक व सामाजिक विषयों पर होने वाले विमर्शों के चर्चित चेहरे हैं। आकाशवाणी से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लंबे समय से जुड़े रहे हैं।

चतुर्थ अध्याय में बल्देव भाई शर्मा के पत्रकारिता के सामाजिक पक्ष, राजनीतिक पक्ष और आध्यात्मिक पक्ष, शोध प्रश्नों एवं उपकल्पना को ध्यान में रखते हुए कुछ लेख एवं बल्देव भाई शर्मा का एवं उनसे संबंधित पत्रकारिता के प्रोफ़ेसर एवं वरिष्ठ पत्रकारों कासाक्षात्कार का चयन किया गया है जिनका ,अंतरवस्तु विश्लेषणशामिल है।

पंचम अध्याय में प्राप्त आंकड़ो और उसके विश्लेषण के आधार पर शोध प्रश्न एवं उपकल्पना का सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष को शामिल किया गया है। निष्कर्ष के पश्चात् संदर्भ ग्रंथ सूची है और परिशिष्ट है जिसके द्वारा भविष्य के शोधार्थी सहायता प्राप्त कर सकता है।

शोध सारांश

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा पाया भी कहा जाता है। पत्रकारिता ने लोकतंत्र में यह महत्त्वपूर्ण स्थान अपने (स्तम्भ) आप नहीं हासिल किया है बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्त्व को देखते हुए समाज ने ही दर्जा दिया है। कोई भी लोकतंत्र तभी सशक्त है जब पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहे। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका अपनाये। साथ ही राष्ट्र के सामाज। सांस्कृतिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे।

पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डाले तो स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य था। स्वतंत्रता के लिए चले आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिताने अहम और सार्थक भूमिका निभाई। उस दौर में पत्रकारिता ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ –साथ पूरे समाज को स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा। भारत में पत्राकारिता का उद्भव ही राष्ट्रव्यापी पुनर्जागरण और समाज कल्याण के उद्देश्य से हुआ था। महात्मा गांधी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, महर्षि अरविंदबाल गंगाधर तिलक आदि लोग पत्रकारिता के महान स्तम्भ थे। जिन्होंने पत्रकारिता को देशहित में कार्य करने का लक्ष्य और प्रेरणा दी।

लेकिन वर्तमान दौर में भी बल्देव भाई शर्मा ने देश हित में पत्रकारिता करने का साहसिक कार्य किया है। बल्देव भाई ने समाज सेवा को ही अपना मूल कर्त्तव्य माना है। इन्होनें कई अखबारों में निष्पक्ष रहकर पत्रकारिता की है। दैनिक स्वदेश, दैनिक भास्कर, अमर उजाला जैसे नेशनल अखबारों के संपादक रह चुके हैं, तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखपत्र साप्ताहिक हिंदी पत्रिका 'पाञ्चजन्य' का भी संपादक रह चुके है। "राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा की दो पुस्तकें भी है- 'मेरे समय का भारत' और 'आध्यात्मिक चेतना और सुगंधित जीवन। 'इन पुस्तकों में भारत का समकालीन इतिहास लिखा गया है, जिसमें राष्ट्र सर्वोपरि है। अपने लेखों के माध्य्म से बल्देव भाई ने समकालीन भारत और जीवन के हर आयाम को छुआ है। इससे समाज और राष्ट्र को दिशा मिलेगी।

प्रस्तावना को व शोध प्रविधि को छोड़कर शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में बाटकर अध्ययन किया गया है। प्रथम अध्याय बल्देव भाई शर्मा का परिचय एवं पृष्ठभूमि है। परिचय एवं पृष्ठभूमि के अंतर्गत उनका परिवेश, शिक्षा, पत्रकारिता में शरुआत, संपादक के रूप में दायित्व, कार्यशैली व चुनौतियाँ, उपलब्धियाँ, पत्रकारीय अनुभव, बल्देव भाई शर्मा की संपादित पुस्तक एवं इनके द्वारा प्राकशित पुस्तकों के बारे में विस्तार से बताया गया

है। यह अध्याय बल्देव भाई की सम्पूर्ण जीवन की पृष्ठभूमि से लेकर वर्तमान समय तक की यात्रा व पत्रकारीय अनुभव पर आधारित है।

बल्देव भाई शर्मा बहुत ही साधारण कृषक परिवार से आते हैं। इनके पिता श्री मंगीलाल शर्मा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक थे, जिसके फलस्वरूप संघ के अनेक विशिष्टजनों से उनकी व्यक्तिगत निकटता रहती थी। बचपन से ही अपने परिवार में संघ का माहौल इन्होनें देखा। इनके गाँव में ही संघ की शाखा लगती थी। इस तरह से इनका बचपन से ही शाखा में नियमित रूप से जाना होता था। हालांकि उस समय इनके अन्दर बहुत ज्यादा संघ की विचारधारा आदि को लेकर समझ नहीं थी। लेकिन नियमित रूप से शाखा जाना चाहिए इसका संस्कार इन्हें अपने परिवार विशेष कर पिता जी के माध्यम से मिला। फिर जैसे जैसे बड़ा होते गये-राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारकों आदि से मिलनाझुलना होता चला - गया। संघ के शाखा के अन्दर अनेक तरह के कार्यक्रम होते थे जिसका अनुभव संस्कार के रूप में होता चला गया और इस तरह से धीरेधीरे संघ के बारे में समझ भी विकसित होती चली गयी।

द्वितीय अध्याय बल्देव भाई शर्मा का पत्रकारीय दृष्टिकोण है। इसके अंतर्गत बल्देव भाई शर्मा के सामाजिक दृष्टिकोण, राजनीतिक दृष्टिकोण, आध्यात्मिक दृष्टिकोण व वैश्विक दृष्टिकोण को शामिल किया गया है। बल्देव भाई शर्मा ने सामाजिक सरोकारों ,राष्ट्रहित और लोक जागरण के-महत उद्देश्य के लिए ही पत्रकारिता की भूमिका को महत्वपूर्ण मानकर ही इस क्षेत्र में कार्य करना तय किया। इनका मानना था कि "सफल और नामचीन होना हमें भले ही बड़ी उपलब्धि लगता हो, लेकिन वह ज्यादातर तात्कालिक ही होती है। आज हम सफल और नामचीन है तो कल हमें ही कोई रौंदकर हमसे भी ज्यादा सफल और नामचीन हो जाता है। फिर आज तक हम जिस अहम् को लेकर घूमते थे, वह मिट जाता है।

तृतीय अध्याय बल्देव भाई शर्मा का पत्रकारीय योगदान है। बल्देव भाई शर्मा का हिंदी पत्रकारिता का में काफी सराहनीय योगदान रहा है। इनके द्वारा राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व के मुद्दों पर सभी प्रमुख पत्रपत्रिकाओं के लिए लेखन - कार्य किया गया है। वरिष्ठ पत्रकार बल्देव भाई शर्मा को पत्रकारिता में उच्च योगदान के लिए जाना जाता है। बल्देव भाई शर्मा ने उजाला वर्षों से पत्रकार के रूप में कार्य करते हुए अमर 35, भास्कर, पाञ्चजन्य और स्वदेश समेंत कई प्रमुख समाचार पत्रों में संपादक के साथ उच्च पदों का सफलता पूर्वक निर्वहन किया हैं। वे विभिन्न हिंदी समाचार चैनलों पर राजनीतिक व सामाजिक विषयों पर होने वाले विमर्शों के चर्चित चेहरे हैं। आकाशवाणी से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लंबे समय से जुड़े रहे हैं। वह कई एक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। बल्देव भाई शर्मा को सामाजिक सरोकार और राष्ट्रवादी पत्रकारिता के लिए जाना जाता है। हाल में ही उनकी तीन प्रकाशित पुस्तकें मेरे समय का भारत, आध्यात्मिक चेतना और सुगंधित जीवन व हमारे सुदर्शन काफी चर्चित रहीं। बल्देव भाई ने पत्रकारिता के साथ साथ-2007 में